मुंशी प्रेमचंद का निबंध

साहित्य का उद्देश्य

भाग 1

डॉ. राजेन्द्र सिंह
आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
स्नातक प्रतिष्ठा हिन्दी छठा सेमेस्टर
पाठ्यक्रम प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 – 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंगेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था।
- इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

‘मंगलसूत्र’ अधूरा उपन्यास
‘दुर्गादास’ एक बालोपयोगी उपन्यास

यह निबंध सत्यप्रकाश मिश्र जी द्वारा संपादित 'प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध' में संकलित है।

- यह निबंध भारत में लखनऊ में 9-10 अप्रैल 1936 को संपन्न पहले 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण के तौर पर तैयार किया गया था
- इस अधिवेशन में मुंशी प्रेमचंद के साथ जैनेन्द्र ने भी शिरकत की थी।
- यह निबंध सम्मेलन में पढ़ा गया था।
- इस निबंध में साहित्य एवं समाज के अंतसंबंध पर गहनता से विचार विमर्श किया गया है।

मुंशी प्रेमचंद ने इस निबंध में सबसे पहले साहित्य की भाषा पर जोर दिया है। मुंशी प्रेमचंद एक ऐसी भाषा के पक्षधर थे जो आम जनमानस के अधिक निकट, जिसमें हो, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी के आम लोक-प्रचलित शब्द हों।

उन्होंने निबंध में लिखा है -

"हमारी भाषा के पायनियरों ने - रास्ता साफ करने वालों ने - हिन्दुस्तानी भाषा का निर्माण करने वालों ने जाति पर जो अहसान किया है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ न हों तो यह हमारी कृतघ्नता होगी।"

मुंशी प्रेमचंद से पहले और उनके समय समय तक ऐयारी, तिलस्मी, जादुई और निपट काल्पनिक उपन्यास लिखने का चलन था। परंतु प्रेमचंद ने साहित्य को सामाजिक समस्याओं से जोड़ा। उन्होंने इस निबंध में लिखा –

‘‘साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सचाई प्रकट की गई हो। जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयां और अनुभूतियां व्यक्त की गई हों।’’

मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य की परिभाषा दी है –

जीवन की आलोचना

- यानि जीवन की सम्यक व्याख्या ही साहित्य है ।
- जीवन का मूल्यांकन की साहित्य है।
- साहित्य मानव जीवन को संवेद्य बनाने की प्रक्रिया है।
- साहित्य के केन्द्र में आदमी,, समाज और उसका यथार्थ होता है।
- प्रेमचंद के अनुसार साहित्य और सामयिक परिस्थियों का गहरा संबंध होता है।
- निबंध में वे लिखते हैं –

‘‘साहित्य अपने काल का प्रतिबिम्ब होता है। जो भाव और विचार लोगों के हृदयों को स्पंदित करते हैं, वही साहित्यकार पर भी अपनी छाया डालते हैं। ऐसे पतन के काल में लोग या तो आकशकी करते हैं या अध्यात्म और वैराग्य में मन रमाते हैं।’’

साहित्य, साहित्यकार और समाज के के अंतर्संबंध को देखते हुए दो रूपों की कल्पना की जा सकती है –
पहला, साहित्यकार समाज की चाल के अनुसार चलता हुआ उसी प्रकार का साहित्य सृजन करे।
दूसरा, साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज की चाल को बदनले का प्रयास करे।

मुंशी प्रेमचंद दूसरी प्रकार के साहित्यकार ठहरते हैं, उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की दिशा बदलने का प्रयास किया और वे काफी हद तक कामयाब भी हुए।
उन्होंने लिखा भी है –

"अब साहित्य केवल मन बहलाव की चीज़ नहीं, मनोरंजन के सिवा उसका और भी कृछ उद्देश्य है। अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता, किंतु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हल भी करता है।"

मुंशी प्रेमचंद जी के पूरे साहित्य का यही दर्शन भी है।

प्रेमचंद के अनुसार साहित्यकार अन्य लोगों से अधिक संवेदनशील होता है। उसके अंदर समाज एवं सौंदर्यबोध की वृति जितनी अधिक जागृत और सक्रिय होगी वह उसी अनुपात में प्रभावशाली साहित्य की रचना कर सकता है।

साहित्यकार अभद्रता, असुंदरता, अन्याय से लड़ता है और अपने साहित्य के माध्यम से उसका पर्दाफाश करता है।

प्रेमचंद लिखते हैं –

‘‘यों कहिए कि वह मानवता, दिव्यता और भद्रता का बाना बांधे होता है। जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है – चाहे वह व्यक्ति हो या समूह – उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है। उसकी अदालत में वह अपना इस्तगासा पेश करता है और उसकी न्यायवृत्ति को तथा सौंदर्यवृत्ति को जागृत करके अपना यत्न सफल बनाता है।’’

समाज की विद्रूपताएं, असमानताएं, अन्याय, भेदभाव, दुख आदि देख कर साहित्यकार का मन उद्वेलित होता है और वह लिखने के लिए विवश होता है। प्रेमचंद जी मानते हैं कि साहित्यकार समाज का एक अभिन्न अंग होते हुए अपने अंदर से ही क्रांति की ज्वाला जाग्रत करता है।

इस निबंध में वे लिखते हैं –

‘‘वर्तमान मानसिक और सामाजिक अवस्थाओं में उसका दिल कुढ़ता रहता है। वह इन अप्रिय अवस्थाओं का अंत कर देना चाहता है, जिससे दुनिया जीने और मरने के लिए इससे अधिक अच्छा स्थान हो जाए। यही वेदना और यही भाव उसके हृदय और मस्तिष्क को सक्रिय बनाए रखता है।’’

समाज की विद्रूपताएं, सामाजिक घातक रूढ़ियां - दहेज, वेश्यावृत्ति, अनमेल विवाह, जारकर्म, किसान की आत्महत्याएं, महाजनी सभ्यता ये सब साहित्यकार के लिए खाद-पानी का काम करते हैं। वह इन सबको सहन नहीं कर पाता और साहित्य सृजन के माध्यम से इनके विरुद्ध लड़ता है

प्रेमचंद कहते हैं -

"उसका दर्द भरा हृदय इसे सहन नहीं कर सकता कि एक समुदाय क्यों सामाजिक नियमों और रूढ़ियों के बंधन में पड़कर कष्ट भोगता रहे। क्यों न ऐसे सामान इकट्ठा किए जाएं कि वह गूलामी और गरीबी से छुटकारा पा जाए। वह इस वेदना को जितनी बेचैनी के साथ अनुभव करता है, उतना ही उसकी रचना में जोर और सच्चाई पैदा होती है। अपनी अनुभूतियों को वह जिस क्रमानुपात में व्यक्त करता है, वही उसकी कला कुशलता का रहस्य है।"

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं –

- मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों में परिगणित किए जाते हैं।
- 'साहित्य का उद्देश्य' उनका प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में दिया गया अध्यक्षीय भाषण था।
- 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध में मुंशी प्रेमचंद ने साहित्यकार की समाज के प्रति प्रतिबद्धता को सुनिश्चित किया है।
- भाषा पर विचार करते हुए प्रेमचंद ने एक प्रौढ़ और परिमार्जित भाषा उसी को कहा है जो आम जनमानस के अधिक निकट हो।
- इस भाषा को वे 'हिन्दुस्तानी' भाषा नाम देते हैं।
- प्रेमचंद ने साहित्य को 'जीवन की आलोचना' माना है।
- प्रेमचंद साहित्य और सामयिक परिस्थितियों में अटूट संबंध मानते हैं। वे उसे 'साहित्य अपने काल का प्रतिबिंब' भी कहते हैं।
- प्रेमचंद ने प्रगतिशीलता को साहित्यकार का नैसर्गिक गुण कहा है।

धन्यवाद